हम आठवीं योजना के अन्तर्गत रोजगार वृद्धि की दर को पाने में भी असफल रहे हैं। इस तथ्य को मध्यावधि मूल्यांकन में पहले ही स्वीकार किया गया है। सरकार लक्ष्य प्राप्त करने में असफल रही है। वर्ष 1991-92 में 5 मिलियन लोगों को रोजगार की आवश्यकता थी जबकि वर्ष 1992-93 में 2 मिलियन और वर्ष 1993-94 में 3 मिलियन लोगों को रोजगार की आवश्यकता थी। मैं यह आंकड़े योजना आयोग के दस्तावेज से उद्धरित कर रहा हूं। इसलिए इन तीन वर्षों के दौरान ही आठवीं पंचवर्षीय योजना का लक्ष्य 10 मिलियन से भी अधिक पीछे रह गया है। शेष दो वर्षों में सरकार आठवीं योजना के लिए निर्धारित रोजगार का सृजन कैसे करेगी ? मुझे सरकार से इस प्रश्न का उत्तर चाहिए।

पिछले तीन वर्षों के दौरान व्यापार घाटे के तुलनात्मक आंकड़ों को देखें तो पता चलता है कि वर्ष 1993-94 में यह अन्तर केवल 250 मिलियन डालर था, वर्ष 1994-95 में यह अन्तर 798 मिलियन डॉलर हो गया तथा वर्ष 1995-96 में यह अन्तर 1976 मिलियन डालर हो गया है। क्या यही सुधार है जिसकी परिकल्पना की गई थी ? वर्ष 1995-96 में अप्रैल से अगस्त तक आयात में वृद्धि हुई है। इस पांच महीनों के दौरान आयात में 31 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई है।

5.00 म.प.

[अध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए]

इस अवधि में निर्यात केवल 27 प्रतिशत बढ़ा। वित्तीय घाटा जो कि 36,325 करोड़ रु. का था, बढ़कर 68,484 करोड़ रु. होने का अनुमान है। जहां तक विदेशी ऋण का संबंध है, मार्च 1991 में यह 83.8 बिलियन डॉलर थी, और आज यह बढ़कर लगभग 95.3 बिलियन डॉलर हो गया है। हमारा आन्तरिक ऋण लगभग 4,80,000 करोड़ रुपये का है। वर्ष 1995-96 के दौरान हमें 12.3 बिलियन डॉलर का ऋण भुगतान करना है।

अत: विदेशी मुद्रा का भण्डार 20 बिलियन डालर का है क्योंकि ह्रास् के कारण इसमें अतिरिक्त दो मिलियन डालर की कमी हो गई है। अब हमें इसी वर्ष 12.3 मिलियन डालर लौटाने हैं। अत: मैं वित्त मंत्री से पूछता हूं कि इसके बाद हमारे पास कितनी विदेशी मुद्रा रह गई है जिसकी वह डींग मारते हैं।

महोदय, मुझे आपना निवेदन पूरा करने के लिए दस मिनट का समय और चाहिए। क्या मुझे अपनी बात जारी रखनी चाहिए या मैं इसे बाद में कह सकता हूं ?

अध्यक्ष महोदय : आप बाद में बोल सकते हैं।

अब, दो वक्तव्य दिए जाने हैं, एक माननीय प्रधान मंत्री जी द्वारा और दूसरा माननीय संचार मंत्री द्वारा। पहले प्रधान मंत्री का वक्तव्य सुनना बेहतर होगा।

5.02 म.प.

प्रधान मंत्री द्वारा वक्तव्य

"इन्सेट - 2 सी" उपग्रह का प्रक्षेपण

प्रधान मंत्री (श्री पी. वी. नरसिंह राव) : इस महान सदन को यह सूचित करते हुए मुझे खुशी हो रही है कि भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन द्वारा डिजाइन एवं निर्मित इन्सैट-2सी उपग्रह को आज सुबह सफलतापूर्वक प्रमोचित किया गया। इन्सैट-2सी उपग्रह को लेकर एरियाने प्रमोचक राकेट ने फ्रेंच गियाना में स्थित कौरू से भारतीय समयानुसार प्रात: 04.53 बजे उड़ान भरी और उसे 200 कि0मी0 की उपभू कक्षा और 35976 कि0मी0 की अपभू कक्षा के साथ भू-तुल्यकालिक अन्तरण कक्षा में स्थापित किया। उपग्रह अब प्रति साढ़े दस घंटे में पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है। .

कर्नाटक के हासन में स्थित इन्सैट मुख्य नियंत्रण सुविधा ने इन्सैट-2सी के कक्षा में अन्त:क्षेपण के लगभग दो मिनट बाद दूरमिति संकेतों को प्राप्त किया और उपग्रह के स्वास्थ्य के सामान्य होने की पुष्टि की है। उपग्रह को प्रचालनात्मक बनाने के पहले कई युक्तिचालन कार्य आयोजित किये जाने हैं। उपग्रह में रखी द्रव अपभू मोटर की फायरिंग द्वारा इन्सैट-2सी की कक्षा को, भूमध्यरेखीय तल में पृथ्वी से लगभग 36,000 कि0मी0 ऊपर उसकी अन्तिम भू-तुल्यकालिक कक्षा तक, संवर्धित किया जाएगा। उपग्रह द्वारा निकट भू-तुलकालिक कक्षा प्राप्त करने के बाद दो सौर व्यूहों और दो एन्टेनाओं का प्रस्तरण किया जाएगा। तद्नन्तर, उपग्रह पर स्थित सभी नीतभारों की जांच की जाएगी। कक्षा संवर्धन, उपांगों का प्रस्तरण तथा सभी नीतभारों की, प्रारंभिक जांच लगभग तीन सप्ताह में हो जाने की संभावना है।

इन्सैट मुख्य नियंत्रण सुविधा से ये सभी प्रचालन कार्य आयोजित किये जायेंगे और मुझे विश्वास है कि इन्सैट-2सी को राष्ट्र की सेवा में समर्पित करने के उनके मिशन में सम्पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए इसरों के वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को शुभकामनाएं देने के लिए इस सदन के सभी सदस्य मेरा साथ देंगे।

श्री लाल कृष्ण आडवाणी (गांधीनगर) : महोदय, मैं भी प्रधान मंत्री के साथ उन वैज्ञानिकों और तकनीशियनों को बधाई देता हूं और प्रशंसा करता हूं जिन्होंने यह सफलता प्राप्त की है और देश को इस गर्व की अनुभूति करवाई है।

[हिन्दी]

श्री शरद यादव (मधेपुरा) : अध्यक्ष जी, मैं भी इस गौरवशाली काम के लिए प्रधान मंत्री के साथ, जो वैज्ञानिकों, तकनीशियंस और वहां के कर्मचारियों ने बड़ा काम किया है, उसमें अपने आपको सम्मिलित करता हूं।

[अनुवाद]

श्री सोमनाथ चटर्जी : अध्यक्ष महोदय, हमारे प्रधान मंत्री और अन्य

माननीय सदस्यों ने यहां पर जो कुछ कहा उससे अपने आप को और अपने दल को संबद्ध करते हुए मैं बहुत प्रसन्न हूँ।

मैं अपने तकनीशियनों, वैज्ञानिकों और इस परियोजना से जुड़े सभी लोगों को इसके सफलतापूर्वक पूरा होने पर, चाहे वे किसी भी तरह से इससे जुड़े हुए हों, को हार्दिक बधाई देना चाहता हूँ। महोदय, इससे पता चलता है कि अवसर दिए जाने पर हमारे वैज्ञानिक और तकनीशियन विश्व स्तर का कोई भी निर्माण पर सकते हैं जिस पर आप गर्व कर सकते हैं। इससे पता चलता है कि अवसर दिए जाने पर और अनुसंधान और विकास की समुचित सुविधाएं दिए जाने पर वे यह सब हासिल कर सकते हैं। जिसके लिए वित्त मंत्री को उदार दृष्टिकोण अपनाना चाहिए। हम विश्व स्तर की विशेषज्ञता हाँसिल कर सकते हैं जिस पर हम गर्व कर सकते हैं और जो हुआ है उस पर भी हमें गर्व हैं। मैं इससे संबद्ध सभी लोगों को बधाई देना चाहता हूँ।

[हिन्दी]

श्री भोगेन्द्र झा (मधुबनी) : अध्यक्ष जी, जो प्रधान मंत्री ने कहा है उन भावनाओं और शब्दों के साथ मैं भी अपने को पूरी तरह से समाहित करता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि जो उपलब्धि हमारे वैज्ञानिकों ने और उससे सम्बन्धित अधिकारियों ने हासिल की है उससे सबक लेकर राष्ट्रीय आत्मविश्वास से भरकर हम सभी लोग देश को आगे बढ़ाने की दिशा में कदम बढ़ाएंगें।

[अनुवाद]

श्री शोभनाद्रीश्वर राव वाड्डे (विजयवाड़ा) : अपने देश के लिए यह महान प्रतिष्ठा हासिल करने के लिए हम प्रधान मंत्री जी के साथ अपने वैज्ञानिकों को बधाई देते हैं।

[हिन्दी]

श्री हरि किशोर सिंह (शिवहर) : भारतीय विज्ञान और तकनीकी विकास के गौरवपूर्ण प्रयासों पर मैं अनेक वैज्ञानिकों और तकनीशियनों को मुबारकबाद देता हूँ और प्रधान मंत्री तथा सदन के अन्य सदस्यों की भावना से अपने को सम्बद्ध करता हूँ।

[अनुवाद]

मेंजर जनरल (रिटायर्ड) भुवन चन्द्र खण्डूरी (गढ़वाल) : अध्यक्ष महोदय, जिन उपलब्धियों पर हमें गर्व है और जिनके लिए हम अपने वैज्ञानिकों को बधाई दे रहे हैं उनके संबंध में, मैं इस सरकार को यह भी याद दिलाना चाहता हूँ कि हमारे वैज्ञानिकों की बहुत सी उपलब्धियां फलीभूत नहीं हुई हैं। इस संबंध में मैं अपने प्रधान मंत्री जी से अनुरोध करना चाहता हूँ कि अग्नि और पृथ्वी प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम को आगे बढ़ाया जाए। इस क्षेत्र में आश्चर्यजनक कार्य हुआ है। लेकिन उनकी सहायता के लिए कुछ भी नहीं किया जा रहा है। अत: इस देश की बेहतरी के लिए हमारे वैज्ञानिकों के सभी प्रयासों का पूरी तरह से उपयोग नहीं किया जा रहा है। और मैं यह बात प्रधान मंत्री जी के ध्यान में लाना चाहता हूँ।

श्री ई० अहमद (मंजेरी) : महोदय, इससे पता चलता है कि हमारे महान देश में विज्ञान के क्षेत्र में एक महान सफलता अर्जित करके एक और उपलब्धि प्राप्त कर ली है, और यह पूरे देश के लिए गर्व की बात है। मैं इस अवसर पर सभी पात्र व्यक्तियों को बधाई देता हूँ। और उनकी प्रशंसा करता हूँ।

श्री पी. सी० थॉमस (मुवत्तुपुज्जा) : मैं अपनी और अपने दल की ओर से अंतरिक्ष और अंतरिक्ष अनुसंधान के क्षेत्र में एक बहुत बड़ी सफलता हासिल करने के लिए अपने वैज्ञानिकों, तकनीशियनों और सभी संबंधित व्यक्तियों को बधाई देता हूँ। महोदय, ह्यूसटन, यू०एस०ए० में "नासा" अपनी गतिविधियां कम कर रहा है। महोदय, अपनी गतिविधियां बढ़ाने के लिए यह अच्छा समय है। मैं प्रधान मंत्री जी, सरकार और वैज्ञानिकों को एक बार फिर बधाई देता हूँ।

श्री अर्जुन सिंह (सतना) : माननीय अध्यक्ष महोदय, इस सभा ने एक उत्तेजक..... **(व्यवधान)**..... माननीय अध्यक्ष महोदय, इस समाचार से सभी आनन्दित और उत्साहित हो गए हैं। यह उपलब्धि इस देश के युवा और अनुभवी वैज्ञानिकों के एक दशक से भी अधिक समय से चल रहे अथक और समर्पित प्रयासों के पूर्णत: अनुरूप हैं।

मैं समझता हूँ कि अब समय आ गया है जब हमें केवल उन्हें बधाई ही नहीं देनी चाहिए बल्कि उनकी सलाह की, हमारी अनेक राष्ट्रीय नीतियों चाहे वह नीति रक्षा, संचार या अंतरिक्ष से ही संबंधित ही क्यों न हों, में एक महत्वपूर्ण भूमिका होनी चाहिए क्योंकि राष्ट्रीय हितों की गति देने, इन कार्यों में देश के हितों को बढ़ावा देने के लिए उनकी स्वतंत्र और स्पष्ट राय है। यही समय है कि उन्हें इन क्षेत्रों में भी मान्यता मिले।

इन शब्दों के साथ मैं इस देश के वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए सदन द्वारा व्यक्त भावनाओं के साथ अपने आप को सम्बद्ध करता हूँ।

[हिन्दी]

श्री उदय प्रतापसिंह (मैनपुरी) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं सदन की भावनाओं के साथ अपने को और अपनी पार्टी को सम्बद्ध करता हूँ और दो पंक्तियां पढ़ना चाहूंगा कि :

जहां अवतार जन्में हैं, पले हैं वीर ऋषि योगी,
न कोई यह समझ बैठे कि अब यह भूमि परती है,
यहां का हर नया अंकुर अगर पल गया ढंग से,
नमूना बनकर जायेगा कि उपजाऊ धरती है।
यह बड़ी उपजाऊ धरती है।

ऐसे लोगों को इस सदन की ओर से भी सम्मान मिलना चाहिए इन्हीं शब्दों के साथ मैं एक बार फिर इन तमाम लोगों को सम्मान देते हुए बैठता हूँ।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : इनसेट-2सी का निर्माण और सफल प्रक्षेपण के

लिए जिम्मेदार वैज्ञानिकों, अभियंता कामगार और योजना बनाने वालों ने हमें गौरान्वित किया है और वे वास्तव में हमारे हार्दिक बधाई के पात्र हैं जो हम उदारतापूर्वक दे चुके हैं। इस सभा की ओर से नेताओ, वैज्ञानिकों, अभियंताओं और कामगारों को इस आशय की बधाई संप्रेषित की जाए।

श्री पी. वी. नरसिंह राव : महोदय, हम ऐसा करेंगे।

5.04 म.प.

मंत्री द्वारा वक्तव्य

मौलिक टेलीकॉम सेवाओं के प्रचालन हेतु निजी कम्पनियों को लाईसेंस दिया जाना

संचार मंत्रालय के राज्य मंत्री (श्री सुखराम) : माननीय अध्यक्ष महोदय.... (व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : इस सदन के समय का सदुपयोग बौद्धिक वाद-विवाद के लिए करना चाहिए।

श्री सुखराम : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं देश के विभिन्न भागों में मौलिक टेलीकाम सेवा के प्रचालन हेतु निजी कम्पनियों को लाइसेंस जारी करने के लिए निविदाओं की स्थिति के दर्जे के संबंध में एक वक्तव्य जारी करना चाहता हूँ। कुछ माननीय सदस्यों द्वारा एक निजी कम्पनी मैसर्स एच. एफ. सी. एल. बेजेक टेलीकॉम लिमिटेड के प्रति दिखाये गये पक्षपात के संबंध में की गई टिप्पणियों को देखते हुए इस प्रकार का वक्तव्य जारी करना आवश्यक हो गया है . . .(व्यवधान)

श्री जसवन्त सिंह (चित्तौड़गढ़) : अध्यक्ष महोदय, सदन को यह सूचना दी गई थी कि वक्तव्य को चार बजे की अपेक्षा सायंकाल पांच बजे तक रोककर रखा जाये ताकि इसकी पर्याप्त प्रतिलिपियां उपलब्ध हो सकें और इसका हिन्दी अनुवाद जो कि पूरा नहीं हुआ था, उसको भी उपलब्ध किया जा सके।

मुझे विश्वास है कि यह पूर्णतय: एक प्रशासनिक कठिनाई/अड़चन है, परन्तु यदि पर्याप्त प्रतिलिपियों की व्यवस्था हो जाएगी तो इससे हमको सहायता मिलेगी क्योंकि यह एक जटिल मामला है।

अध्यक्ष महोदय : क्या सदस्यों को प्रतिलिपियां दे दी गई हैं ?

श्री सुखराम : महोदय, अब प्रतिलिपियां तैयार हैं और मैं समझता हूँ कि पांच या दस मिनट में, ये प्रतिलिपियां माननीय सदस्यों को दे दी जायेंगी। . . . . (व्यवधान)

[हिन्दी]

एक माननीय सदस्य : जिस कम्पनी का नाम आ रहा है, उस कम्पनी का नाम तो होना चाहिए कि वह कौन सी कम्पनी है ?

प्रो. रासा सिंह रावत (अजमेर) : ऐसे मामलों में जान बूझकर लापरवाही करना चाहते हैं . . . (व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : हमारे सदन में हमारे पास मंत्री द्वारा जारी वक्तव्य के अनुपूरक नहीं हैं। अब कृपया मंत्री जी को अपना वक्तव्य जारी करने दें। मुझे कहा गया है कि इसकी प्रतिलिपियां तैयार हो रही हैं, हो सकता है प्रतिलिपियां तैयार हों और सदस्यों को दे दी जाएंगी। सदस्यों को प्रतिलिपियां मिल जाएंगी।

[हिन्दी]

श्री जसवन्त सिंह : आपने ही फरमाया था कि हिन्दी ट्रांसलेशन की वजह से . . . . (व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : मैंने उनसे यह बात सुनी थी। हमें यह समझना चाहिए कि यह ऐसा मामला है जो कि शून्य काल में किया गया है।

श्री जसवन्त सिंह : महोदय, मैं यह बात जानता हूँ परन्तु ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि उन्होंने स्वयं कहा था कि प्रतिलिपियों की व्यवस्था करेंगे।

[हिन्दी]

श्री अष्टभुजा प्रसाद शुक्ल (खलीलाबाद) : यह हमारा अधिकार है। सरकार क्या कर रही है ? करोड़ों रूपया खर्च कर दिया।

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : क्या संसदीय कार्य मंत्री अथवा कोई भी सदसय हिन्दी संस्करण प्रतिलिपियां उपलब्ध करवा देंगे ?

(व्यवधान)

श्री सुखराम : महोदय, अंग्रेजी और हिन्दी, दोनों संस्करण दस मिनट में उपलब्ध कर दिये जायेंगे।

[हिन्दी]

श्री प्रभू दयाल कठेरिया (फिरोज़ाबाद) : मालूम होता है कि हम अमेरिका की पार्लियामेंट में बैठे हैं। सरे आम हिन्दी की उपेक्षा हो रही है। सरकार कर रही है। हिन्दी की अपेक्षा। हम सदन के माननीय सदस्य हैं ..... (व्यवधान)

[अनुवाद]

जल संसाधन मंत्री तथा संसदीय कार्य मंत्री (श्री विद्या चरण शुक्ल) : महोदय, हिन्दी अनुवाद में थोड़ा समय लगता है। अत: हिन्दी अनुवाद शीघ्र ही मिल जाएगा।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : आप बैठ जाइए। आप पहले बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : देखिए, हिन्दी का वर्जन भी आपको दिया जाएगा। मिनिस्टर यहां पर स्टेटमेंट कर रहे हैं और उसका ट्रांसलेशन भी हिन्दी में हो रहा है। आप सुन लीजिए प्लीज। बाहर ऐसा एम्प्रेशन नहीं जाना चाहिए कि मिनिस्टर को जो कहना है, आप सुन नहीं रहे हैं। आपने जो कहा है, उन्होंने सुना है और उसके बाद दे रहे हैं। कापीज